[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 5346 **G** **आपका अनुक्रमांक.....**

Unique Paper Code : 205555

Name of the Paper : Natak Ekanki Evam Nibandh (नाटक, एकांकी एवं निबंध)

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi Discipline**

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7+7+7=21)

(क) ऐसे अवसरों पर उनके मन को संतुलित रखने के लिए बहुत प्रयत्न करना पड़ता है। राजनीति साहित्य नहीं है। उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएं, तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है। ...साहित्य उनके जीवन का पहला चरण था। अब वे दूसरे चरण में पहुंच चुके हैं। मेरा अधिक समय इसी आयास में बीतता है कि उनका बढ़ा हुआ चरण पीछे न हट जाय। ...बहुत परिश्रम पड़ता है इसमें।

अथवा

जीवन के आदि और उत्कर्ष के बीच एक और सीढ़ी है- जीवन का पुरुषार्थ। अपराध क्षमा हो आचार्य, आपकी कला उस पुरुषार्थ को भूल गयी है। जब मैं इन मूर्तियों में बंधे रसिक जोड़ों को देखता हूँ तो मुझे याद आती है पसीने में नहाते हुए किसान की, कोसों तक धारा के विरूद्ध नौका को खेने वाले मल्लाह की, दिन-दिन भर कुल्हाड़ी लेकर खटने वाले लकड़हारे की!..... इनके बिना जीवन अधूरा है, आचार्य!

P.T.O.

अथवा

मनुष्य-हृदय भी रहस्य है, एक पहेली है। जिस पर क्रोध से भैरव हुंकार करता है, उसी पर स्नेह का अभिषेक करने के लिए प्रस्तुत रहता है। उन्माद! और क्या ? मनुष्य क्या इस पागल विश्व के शासन से अलग होकर कभी निश्चेष्टता नहीं ग्रहण कर सकता ? हाय रे मानव ? क्यों इतनी दुरभिलाषायें बिजली की तरह तू अपने हृदय में आलोकित करता है ? क्यानिर्मल-ज्योति तारागण की मधुर किरणों के सदृश सद्वृत्तियों का विकास तुझे नहीं रुचता! भयानक भावुकता और उद्वेगजनक अंतकरण लेकर क्यों तू व्यग्र हो रहा है ? जीवन की शांतिमयी सच्ची परिस्थितियों को छोड़कर व्यर्थ के अभिमान में तू कब तक पड़ा रहेगा ?

(ख) जिस हाथी पर सुनहरी झूलें और सोने का हौदा लगवाकर छत्र-धारण-पूर्वक सवार हुए थे, वह अपने कीमती असबाब सहित जिसका था, उसके पास चला गया। आप भी जानते थे कि वह आपका नहीं और दर्शक भी जानते थे कि आपका नहीं। दरबार में जिस सुनहरी सिंहासन पर विराजमान होकर आपने भारत के सब राजा-महाराजों की सलामी ली थी, वह भी वहीं तक था और आप स्वयं भली-भांति जानते हैं कि वह आपका न था। वह भी जहाँ से आया था वहीं चला गया। यह सब चीजें खाली नुमाइशी थीं। भारतवर्ष में वह पहले से ही मौजूद थीं। क्या इन सबसे आपका कुछ गुण प्रगट हुआ ? लोग विक्रम को याद करते हैं या उसके सिंहासन को, अकबर को या उसके तख़्त को ? शाहजहाँ की इज्जत उसके गुणों से थी या तख्तेताऊस से ? आप जैसे बुद्धिमान पुरुष के लिए यह सब बातें विचारने की हैं।

अथवा

तो क्या हुआ ? यह सब मनुष्य की आत्म-केन्द्रित दृष्टि का प्रसाद है। देवदारु को इससे क्या लेना-देना! वह तो जैसा है वैसा बना हुआ है। तुम उसे वनस्पति कहो या देवता का काठ कहो। तुम्हें अच्छा लगता है तो अच्छा नाम देते हो, बुरा लगता है तो बुरा नाम देते हो। नाम में क्या धरा है। मुमकिन है, इसका पुराना नाम देवतरू हो। देवता का तरु नहीं, देवता भी और तरु भी। देव होकर वह छंद है, तरु होकर अर्थ है। छंद, समष्टिव्यापिनी जीवन-गति के समानान्तर चलने वाले व्यष्टिगत-प्राणवेग का नाम है, अर्थ, समाज स्वीकृति-प्राप्त संकेत हुआ करता है।

(ग) कैसे मंगलमय प्रभात की कल्पना थी और कैसी अंधेरी कालरात्रि आ गई है ? एक दूसरे को देखने से डर लगता है । घर-मसान हो गया है, अपने ही लोग भूत-प्रेत बन गए हैं, पेड़ सूख गए हैं, लताएँ कुम्हला गयी हैं । नदियों और सरोवरों को देखना भी दुस्सह हो गया है । केवल इसलिए कि जिसका ऐश्वर्य से अभिषेक हो रहा था, वह निर्वासित हो गया । उत्कर्ष की मनुष्य की ऊर्ध्वोन्मुख चेतना की यही कीमत सनातन काल से अदा की जाती रही है । इसीलिए जब कीमत अदा कर ही दी गई तो उत्कर्ष की कल्पना न भीगे, वह हर बारिश में, हर दुर्दिन में सुरक्षित रहे ।

अथवा

लोक में फैली दु:ख की छाया को हटाने में ब्रह्मा की आनंदकला जो शक्तिमय रूप धारण करती है, उसकी भीषणता में भी अद्‌भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी आर्द्रता साथ लगी रहती है । विरूद्धों का यही सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौन्दर्य है जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता । इस सामंजस्य का और कई रूपों में दर्शन होता है । किसी कोट-पतलून-हैटवाले को धारा-प्रवाह संस्कृत बोलते अथवा किसी पंडित-वेशधारी सज्जन को अंग्रेज़ी की प्रगल्भ वक्तृता देते सुन व्यक्तित्व का जो एक चमत्कार-सा दिखाई पड़ता है, उसकी तह में भी सामंजस्य का यही सौन्दर्य समझना चाहिए । भीषणता और सरसता, कोमलता और कठोरता कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदुता का सामंजस्य ही लोकधर्म का सौन्दर्य है ।

2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक के विकास पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

हिन्दी नाटक के विकास में जयशंकर प्रसाद के योगदान को स्पष्ट कीजिए ।

3. 'कोणार्क' नाटक की अभिनेयता पर विचार कीजिए । (15)

अथवा

'अजातशत्रु' नाटक की समसामयिकता का मूल्यांकन कीजिए ।

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के आधार पर कालिदास का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. एकाँकी के तत्वों के आधार पर 'शिवाजी का स्वरूप' की समीक्षा कीजिए। (8)

अथवा

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

5. हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के योगदान को स्पष्ट कीजिए। (8)

अथवा

शुक्ल पूर्व हिन्दी निबंधों की विशेषताएँ लिखिए।

6. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (8)

अथवा

'देवरारू' निबंध की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।